14

आदमी जिसने दया दिखाई

(2 राजाओं 6:18-23)

''उसे वही मिला, जिसका वह हकदार था।'' कई बार हम इस वाक्यांश का इस्तेमाल सकारात्मक अर्थ में करते हैं कि ''उसे जो तरक्की मिली उसका वह हकदार था''; ''वह उस तारीफ़ का हकदार था।'' बहुत बार हम इसका इस्तेमाल नकारात्मक अर्थ में किया है: ''उसके साथ जो कुछ भी बुरा हुआ वह उसी के योग्य था यानी उसे वही मिला जिसका वह हकदार है।'' संसार का मानना है कि दूसरों को वही देना, जिसके वे हकदार हैं, मनुष्यजाति का लक्ष्य होना चाहिए। परन्तु मसीही व्यक्ति का लक्ष्य उससे कहीं ऊंचा है, यानी यह कि लोगों को वह नहीं, जिसके वे हक्कदार है बल्कि उन्हें वह दिया जाए जिसकी उन्हें *आवश्यकता* है। एक व्यक्ति ने ''दया'' की परिभाषा इस प्रकार दी: ''जिसकी आपको आवश्यकता तो है पर आप उसके योग्य नहीं हैं।''[1]

इस पाठ में हम अरामी सेना की कहानी को आगे बढ़ा रहे हैं, जिससे उसे एलीशा को पकड़ने को भेजा गया था। इस अध्ययन में हम नबी द्वारा शत्रु सिपाहियों को वह न देने की बात देखेंगे जिसके वे हकदार हैं, बल्कि वह देने को देखेंगे जिसकी उन्हें आवश्यक थी। मैंने इस पाठ का नाम ''आदमी जिसने दया दिखाई'' रखा है।

हैरानीजनक बचाव (6:18, 19क)

पिछले पाठ में एलीशा के सेवक ने देखा था कि परमेश्वर की सेनाएं अराम की सेनाओं से कहीं अधिक ताकतवर और गिनती में अधिक हैं। शायद उसने सोचा, बहुत अच्छे! हम बच गए! परमेश्वर की सेना अब अरामी सेना पर हमला करके उसे नष्ट कर देगी। यदि उसके मन में ऐसे विचार थे तो सम्भवतया उसे निराशा हुई होगी, क्योंकि उनके बचाव के लिए परमेश्वर की ऐसी मंशा नहीं थी। यदि प्रभु सेना को नष्ट कर देता तो अराम का राजा और सेना भेज देता। परमेश्वर की योजना तो अलग थी, ऐसी योजना जो अरामियों और इस्राएल के राजा दोनों के लिए मूल्यवान सबक होती।

एलीशा और उसका सेवक नगर से बाहर पहाड़ी के नीचे गए,[2] जहां सेना थी (आयत 18क)। नबी ने परमेश्वर से अपने सहायक की आंखें खोलने को कहा; अब अपने शत्रुओं के पास आने पर एक अर्थ में उसने प्रार्थना की कि उनकी आंखें बंद हो जाएं: ''इस दल को अन्धा कर डाल'' (आयत 18ख)।

यह अंधापन शारीरिक हो सकता है। (मैं दो सौ से तीन सौ सिपाहियों को रास्ते पर ठोकरें खाते हुए जिनमें प्रत्येक के हाथ अपने से अगले आदमी के कंधों पर, देख सकता हूं!) परन्तु इस स्थिति में कि यह अंधापन शारीरिक था, दिक्कतें हैं। यदि सभी सिपाही अचानक अंधे हो

गए थे, तो क्या वे आतंक से भर नहीं गए होने चाहिए? उन्हें किसी अज्ञात और अनदेखे व्यक्ति पर विश्वास करने और उसकी बात मानने के लिए जो उनके साथ अंधेरे में बात कर रहा था, क्या प्रबन्ध किया: जी. रावल्सिन ने सुझाव दिया कि ''उन्होंने संदेह किया होगा, दूसरों से पूछा होगा और जल्दी से पीछे हट गए होंगे।''[3] जो भी हो यदि अचानक वे शारीरिक रूप से अंधे हुए तो उनकी दिलचस्पी किसी को ढूंढ़ने में जिसे अब वे देख नहीं सकते थे, खत्म हो गई होगी।

यहां और अंग्रेज़ी भाषा में दोनों जगह इस्तेमाल किया गया इब्रानी शब्द ''अंधापन'' गैर शारीरिक स्थिति के लिए हो सकता है। ''अंधापन'' जानकारी की कमी या सोचने या तर्कसंगत रूप में काम करने की अयोग्यता को कहा गया हो सकता है।[4] अधिकतर लेखकों का मत है कि आयत 18 में ''अंधापन'' शब्द मानसिक उलझन की एक स्थिति है[5] जिसमें सेना ने एलीशा की बात पर विश्वास करके उसकी मानी। इस निष्कर्ष के कई कारण हैं, पहला एलीशा ने अपने सेवक की आंखें खोले जाने की प्रार्थना की तो उसका अर्थ यह नहीं था कि सेवक की शारीरिक आंखें खोली हैं। दूसरा इब्रानी शब्द का अनुवाद ''अंधापन'' दूसरी जगह केवल उत्पत्ति 19:11 में मिलता है। कई लेखकों का मानना है कि उत्पत्ति 19:11 शारीरिक अंधेपन के बजाय मन को धुंधला करना है। तीसरा, बाइबल बार बार ''अंधा'' होने के विचार का इस्तेमाल शारीरिक अंधेपन के बजाय मानसिक या आत्मिक अंधेपन से करती है (देखें मत्ती 15:14; 23:16; 2 पतरस 1:9; प्रकाशितवाक्य 3:17)।

अरामी सेना के लिए एलीशा के मन में जो भी था, प्रभु ने उसकी प्रार्थना का उत्तर दिया: ''एलीशा के इस वचन के अनुसार उसने उन्हें अंधा कर दिया'' (2 राजाओं 6:18ग)।

''तब एलीशा ने उन से कहा, यह तो मार्ग नहीं है, और न यह नगर है, मेरे पीछे हो लो मैं तुम्हें उस मनुष्य के पास जिसे तुम ढूंढ़ रहे हो पहुंचाऊंगा'' (आयत 19क)। इन चर्चाओं पर कि एलीशा ने सिपाहियों के साथ झूठ बोला या नहीं और इस बात पर उसे दोष देना चाहिए या नहीं पर कई किताबें लिखी जा चुकी हैं। कम से कम तीन टिप्पणियां तो सही हैं:

- एलीशा शत्रु सेना के साथ बात करने में परमेश्वर का दूत था। आपने इस शृंखला में देखा है कि उसने मोआबियों को यह सोचने दिया कि पानी लहू है (3:22-24)। एक अगामी पाठ में हम देखेंगे कि उसने अरामी सेना को भगाने के लिए उन्हें ''रथों और घोड़ों की भारी सेना की सी आहट'' दिलाई (7:6)। जेमियसन, मुआसे और ब्राउन ने कहा कि एलीशा के शब्दों को ''युद्ध कौशल के प्रकाश में देखा जाना चाहिए, जो युद्ध में हमेशा जायज माना जाता है।''[6] रालिंगटन ने लिखा, ''समय की नैतिकता में और वास्तव में हर युग की नैतिकता में अब तक, लोगों के शत्रु को धोखा देना उचित ही ठहराया गया है।''[7]
- बेशक एलीशा के शब्द अस्पष्ट थे, लेकिन ''तकनीकी रूप से [उसकी] बात गलत नहीं थी।''[8] दोतान वह नगर *नहीं* था, जहां वह रहा था क्योंकि वह तो सामरिया में रहता था और वह उन्हें उसी मनुष्य के पास ''लेकर'' *आया* जिसकी वे तलाश कर रहे थे।
- पुराने नियम के पात्रों से हम बहुत कुछ सीख सकते हैं (रोमियों 15:4), परन्तु उनका

न्याय नये नियम के मानकों से करना गलत होगा।

अरामियों ने एलीशा के पीछे चलना मान लिया और यह जुलूस दक्षिण की ओर चल पड़ा। कितना ज़बर्दस्त नज़ारा होगा कि नबी और उसके सेवक के पीछे-पीछे सैकड़ों भटके हुए सिपाही चल रहे थे!

भौंचक्का हाकिम (6:19ख-23)

अन्त में वे सामरिया नगर में पहुंच गए (आयत 19ख)। एलीशा के अरामी सेना के इलाके में सेना के आगे चलते हुए नगर के फाटकों पर पहुंचने पर आश्चर्य और चिंता की कल्पना कर सकते हैं। एलीशा ने पहरेदारों को फाटक खोलने का विश्वास दिलाया और नगर के बीच में सेना को ले गया (आयत 20क, घ), शाही महल पर (देखें आयत 21क)। फिर नबी ने दोबारा प्रार्थना की, ''हे यहोवा, इन लोगों की आंखें खोल कि देख सकें'' (आयत 20ख)।

''तब यहोवा ने उनकी आंखें खोलीं और वे देखने लगे'' (आयत 20ग)। उनके मन साफ थे, उनकी नज़र टिकी हुई थी और वे अपने आस-पास देख सकते थे। जो कुछ उन्होंने देखा उसे देखकर वे अवश्य स्तब्ध रह गए होंगे। अपनी बात का पक्का एलीशा उन्हें उस आदमी तक ले गया, जिसकी वे तलाश कर रहे थे: और वह उनके सामने खड़ा था। परन्तु जो कुछ उन्होंने केवल इतना ही नहीं देखा। उन्होंने दोतान को घेरा था, पर अब वे स्वयं सामरिया के लोगों और इस्राएल के राजा के श्रेष्ठ पहरेदारों अर्थात उन सब के घेरे में थे, जिनके हथियारों का निशाना उन्हीं के ऊपर था!

राजा को समाचार मिला और वह भी फौरन आ गया। जब उसने अरामी सेना को देखा और वह बहुत रोमांचित हो गया। उसने एलीशा से कहा, ''हे मेरे पिता, क्या मैं इनको मार लूं? मैं उनको मार लूं?'' (आयत 21)। ''हे मेरे पिता'' सम्मान और आदर का सूचक शब्द है। उस समय राजा नबी के प्रति सम्मान दिखा रहा था।[9] आखिर एलीशा ने उसे बेन्हदद की चालों से बचाया था और अब एलीशा ने बेनहदद की सेना का एक बड़ा दस्ता अपने कब्जे में कर लिया था। ''मैं उनको मार लूं? मैं उनको मार लूं?'' उसकी उत्सुकता और पूर्वानुमान का संकेत देता है। अपने मन में मैं राजा को उत्तेजना से ऊपर नीचे उछलते देखता हूं।

एलीशा ने उत्तर दिया, ''मत मार'' (आयत 22क)। आखिर वे योराम के नहीं, बल्कि परमेश्वर के बंदी थे। रॉबट वेनॉय ने सुझाव दिया है कि एक सबक जो प्रभु इस्राएलियों और उनके राजा को सिखाना चाहता था, वह यह था कि ''इस्राएल की राष्ट्रीय सुरक्षा अन्ततः सैनिक बलों या युद्धनीतियों में नहीं बल्कि [उस] में थी।''[10]

एलीशा ने राजा से पूछा, ''क्या तू उनको मार दिया करता है, जिनको तू तलवार और धनुष से बन्धुआ बना लेता है?''[11] (आयत 22ख)। उसका उत्तर ''न'' होना था क्योंकि आम तौर पर युद्धबंदियों को कत्ल नहीं किया जाता था। ऐसा होने के कारण योराम को उनकी हत्या क्यों करनी चाहिए जिन्हें उसने स्वयं *नहीं* पकड़ा था?

यह पूछने का समय है, ''यह सिपाही किसके *हकदार* थे?'' कालांतर में उन्होंने परमेश्वर के लोगों को उजाड़ा था और उनका वर्तमान मिशन परमेश्वर के नबी को पकड़ना और शायद मार डालना था। एक अच्छा मुकदमा बनाया जा सकता है कि वे कठोर से कठोर दण्ड के *हकदार*

थे जो उन्हें दिया जाए, यहां तक कि मृत्यु दण्ड। शायद वे दे देते पर परमेश्वर की योजनाएं और थीं। फिर से मैं इस बात पर ध्यान दिलाता हूं कि यदि प्रभु उन्हें नष्ट कर देता तो बेन्हदद एक और पलटन भेज सकता है। परमेश्वर के मन में अलग ही घटनाक्रम था और उसने इसे अरामियों को वह देकर जिसके वे *हकदार* नहीं थे, बल्कि जिसकी उन्हें *आवश्यकता* थी, पूरा किया।

उन्हें क्या आवश्यकता थी? पहले तो उन्हें ताज़गी की आवश्यकता थी। बारह मील की चढ़ाई चढ़ते हुए वे रात भर उसके पीछे चले थे। दूसरा उन्हें घर जाने यानी आराम में अपने परिवारों के पास वापस जाने की आवश्यकता थी। इस कारण एलीशा ने राजा को बताया, ''तू उनको अन्न जल दे, कि खा पीकर अपने स्वामी के पास चले जाएं'' (आयत 22ग)।

क्या राजा योराम नबी के यह कहने पर कि अपने शत्रुओं को खाना खिलाकर उन्हें छोड़ दे चकित हुआ? सम्भवतया, परन्तु उसने वही किया जो एलीशा ने उसे करने के लिए कहा था। वास्तव में उसने इससे भी बढ़कर किया: ''तब उस ने उनके लिए बड़ी जेवनार की'' (आयत 23क)।

एक महत्वपूर्ण परिणाम (6:23)

यदि राजा चकित हुआ था तो अरामी सिपाही उससे दोगुने चकित हुए होंगे। मैं उन्हें खाने की भरी मेज़ों की ओर ले जाए जाते समय हैरान होने की कल्पना कर सकता हूं। मैं उनके चेहरों पर संदेह को भी पढ़ सकता हूं और उनके मन में आने वाले विचारों की कल्पना कर सकता हूं: ''यह कोई चालाकी है? खाने में ज़हर तो नहीं होगा?'' पहली गराही उन्होंने बड़े डर-डर कर मुंह में डाली होगी, परन्तु जब उसका कुछ बुरा असर न हुआ तो उन्होंने जोश के साथ खाना खाया होगा।

सेना के खा लेने और मस्त होने के बाद राजा ने उन्हें अराम की ओर वापस उनके रास्ते पर भेज दिया (आयत 23ख)। शायद अभी भी उहें संदेह था और वह यह देखने के लिए पीछे मुड़कर झांक रहे थे कि कहीं राजा के तीरअंदाज उन्हें पीछे से तीरों से न उड़ा दें। जब ऐसा कुछ नहीं हुआ तो उन्होंने अपने रास्ते जाने में जल्दी की। मैं उनकी आवाज़ में और उनकी हंसी में राहत की बात सुन सकता हूं, जब वे घटनाओं के अनोखे मोड़ पर बात कर रहे थे।

''वे अपने स्वामी के पास चले गए'' (आयत 23ग): दोतान के मैदान के पार पहाड़ियों में दर्रे में से होते हुए अराम में अन्ततः वे दमिश्क में पहुंच गए। उनके नगर में पहुंचने पर शोर मच गया: ''सेना लौट आई है!'' जब वे महल के बाहर मैदान में थे तो राजा उन्हें मिलने के लिए आया होगा। वेन सकिल पैट्रिक ने उनके बीच में हुई बातचीत की इस प्रकार कल्पना की है:

> राजा ने सेनापति से पूछा, ''नबी मिला?''
> ''हां, मिला।''
> ''तुम ने उसे मार डाला?''
> ''नहीं।''
> ''क्या तुम उसे साथ लाए?''
> ''नहीं।''
> परेशान होते हुए राजा ने कहा, ''यदि वह तुम्हें मिल गया तो तुम ने उसे मारा *क्यों*

नहीं या उसे पकड़ कर क्यों नहीं आए?''

सेनापति ने उत्तर दिया, ''राजन, आप बैठ जाएं, तो बेहतर होगा, क्योंकि आपको इस पर विश्वास *नहीं* होने वाला!''[12]

एलीशा ने जिस प्रकार से अरामी सेना के साथ व्यवहार किया उसका परिणाम क्या निकला? आयत 23 के अन्त में कहानी के नाटकीय निष्कर्ष पर ध्यान दें: ''इसके बाद अराम के दल इस्राएल के देश में फिर न आए।'' सेना को वह देने के बजाय जिसकी वह हकदार थी वह देने से जिसकी उसे आवश्यकता थी, शांति मिली। शांति हो सकता है कि थोड़ी देर के लिए रही हो (देखें आयत 24); हम इसे अस्थाई युद्ध विराम या विरामसंधि कह सकते हैं। जो भी हो, यह शांति थी।

अराम के राजा ने इस्राएल में हमला करने वाले दल भेजने बंद क्यों कर दिए? क्या वह योराम के उदार व्यवहार से प्रभावित हुआ था? क्या उसने यूं ही निर्णय ले लिया कि जब तक इस्राएल में रहने वाले नबी को उसके हर विचार का पता है और वह बिना तलवार निकाले इतनी बड़ी सेना को कब्जे में कर सकता है तब तक वहां सिपाही भेजने का कोई फायदा नहीं है? हम बेन्हदद की मंशा को नहीं जान सकते, पर हमारी दिलचस्पी तो परिणाम में है कि दया दिखाने का महत्वपूर्ण परिणाम *शांति* हुआ।

वर्षों से मैंने ऐसे बहुत से लोगों से बात की, जिन्हें लगता था कि केवल इस बात का ध्यान रखते थे कि दूसरों को वही दिया जाए ''जिसके वे हकदार'' हों। आमतौर पर मैं जब किसी विरोधी के साथ दयापूर्ण और विचार पूर्ण ढंग से व्यवहार करने का सुझाव देता हूं तो ऊपर मिलता है ''पर वह इसका हकदार नहीं है!'' यदि हमें इस सबक से कोई सीख नहीं मिलती तो हमें लोगों को वह देने के महत्व को समझना सीखना आवश्यक है जिनकी उन्हें आवश्यकता है न कि जिसके वे हकदार हैं। कोई व्यक्ति कठोर शब्दों या कठोर व्यवहार का हकदार हो सकता है, पर पूछें कि ''उसे क्या आवश्यकता है?'' क्या उसे दया की आवश्यकता है? क्या उसे प्रेम की आवश्यकता है? आमतौर पर जिन्हें प्रेम की आवश्यकता होती है, वही सबसे कम हकदार होते हैं।

यीशु ने लोगों को जिसके वे हकदार हैं वह देने के बजाय जिसकी उन्हें आवश्यकता है वह देने के महत्व पर ज़ोर दिया। पहाड़ी उपदेश में उसने कहा:

> तुम सुन चुके हो, कि कहा गया था, अपने पड़ोसी से प्रेम रखना और अपने बैरी से बैर। परन्तु मैं तुम से यह कहता हूं, कि अपने बैरियों से प्रेम रखो और अपने सताने वालों के लिए प्रार्थना करो; जिस से तुम अपने स्वर्गीय पिता की सन्तान ठहरोगे। क्योंकि वह भलों और बुरों दोनों पर अपना सूर्य उदय करता है और धर्मियों और अधर्मियों दोनों पर मेंह बरसाता है। क्योंकि, यदि तुम अपने प्रेम रखने वालों ही से प्रेम रखो, तो तुम्हारे लिए क्या फल होगा? क्या महसूल लेने वाले भी ऐसा ही नहीं करते? और यदि तुम केवल अपने भाइयों ही को नमस्कार करो, तो कौन सा बड़ा काम करते हो? क्या अन्यजाति भी ऐसा नहीं करते? इसलिए चाहिए कि तुम सिद्ध बनो, जैसा तुम्हारा स्वर्गीय पिता सिद्ध है (मत्ती 5:43-48; देखें लूका 6:27-36)।

बाद में रोमियों के नाम अपने पत्र में पौलुस ने इसी सच्चाई पर ज़ोर दिया:

> जहां तक हो सके, तुम अपने भरसक सब मनुष्यों के साथ मेल मिलाप रखो। हे प्रियो अपना पलटा न लेना; ... परन्तु यदि तेरा बैरी भूखा हो, तो उसे खाना खिला; यदि प्यासा हो, तो उसे पानी पिला; क्योंकि ऐसा करने से तू उसके सिर पर आग के अंगारों का ढेर लगाएगा [देखें नीतिवचन 25:21, 22]। बुराई से न हारो परन्तु भलाई से बुराई को जीत लो (रोमियों 12:18-21)।

जब आप लोगों को वह देने के बजाय जिसके वे हकदार हैं वह देते हैं जिसकी उन्हें आवश्यकता है तो क्या इससे शांति सुनिश्चित हो जाएगी। नहीं, हर बार नहीं। तौभी आपको यह जानने की संतुष्टि मिलेगी कि आपने वह किया जो प्रभु आपसे चाहता है कि आप करें यानी ''सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप'' रखने के लिए *आप* जो कर सकते हैं आप करेंगे। मसीही के रूप में व्यवहार करना किसी को हानि नहीं पहुंचाता बल्कि इससे आम तौर पर सहायता ही मिलती है। एक बात पक्की है कि ''पलटा लेने'' से कभी शांति नहीं होती बल्कि इससे झगड़ा बढ़ता ही है। शांति की एकमात्र आशा लोगों को वह न देकर जिसके वे हकदार हैं, वह देना है जिसकी उन्हें आवश्यकता है।

आज बहुत सी तनाव भरी परिस्थितियां हैं: पति-पत्नी में असहमति है, माता-पिता और बच्चों के बीच झगड़ा है, पड़ोसियों के बीच दुर्भावना है, सरकारों में विरोध है, देशों के बीच वैसी ही शत्रुता पाई जाती है जैसी इस्राएल और अराम के बीच में थी। क्या यह अद्‌भुत नहीं होगा यदि सभी लड़ने वाले प्रभु की नीति को अपनाने की कोशिश करने का निर्णय लें? ''अपने विरोधी को वह देने के बजाय जिसका वह हकदार है, मैं उसे वह दूं जिसकी उसे आवश्यकता है।'' अगर ऐसा हो जाए तो मुझे हैरानी नहीं होगी यदि कई मामलों में यह परिणाम घोषित किया जाए: ''और शत्रुता जाती रही!'' हां मुझे मालूम है कि यह पूरी दुनिया में नहीं होगा, वहां भी नहीं जहां संसार में पाप पाया जाता है, पर मेरी प्रार्थना है कि यह आपके जीवन में और मेरे जीवन में हो जाए। आइए हम वह सब करें जो ''सब मनुष्यों के साथ मेल-मिलाप'' से रहने के लिए *हम* कर सकते हैं।

सारांश

कहते हैं कि कई प्रकार से एलीशा पुराने नियम के किसी भी नबी से बढ़कर यीशु के जैसा था। हमारे पाठ में एलीशा के कार्य से अधिक इस दावे का बेहतर प्रदर्शन नहीं होगा: कि शत्रुओं को वह देने के बजाय जिसके वे हकदार हैं वह देना जिसकी उन्हें आवश्यकता है। हमारे लिए यीशु ने यही किया। हम किसके *हकदार* थे? सदा के दण्ड के (रोमियों 3:23; 6:23)। हमें क्या *आवश्यकता* थी? कि कोई हमारे लिए मरे और हमारा सनातन छुटकारा सम्भव हो! क्या आप उस सब के लिए जो यीशु ने आपके लिए किया है, धन्यवाद करते हैं? यदि हां तो आप उसकी प्रेम भरी पुकार का उत्तर देने में देरी नहीं करेंगे (मत्ती 11:28-30)। फिर आप की अधिकतर मामलों में शांति हो सकती है यानी परमेश्वर के साथ सुलह (रोमियों 5:1)। आज ही आ जाएं!

टिप्पणियां

[1]सी. रॉय अंगेल, *बॉस्केट्स ऑफ़ सिल्वर* (नैशविल्ले: ब्रॉडमैन प्रैस, 1955), 49 में उद्धृत एस. एम. लिंडसे। [2]दोतान पहाड़ी पर बसा हुआ था और घेरा डाली सेना ने एलीशा के पास ''नीचे'' नहीं जाना था, इस कारण विद्वान ''वे उसके पास आए'' अर्थ से सहमत नहीं होते। क्या यह सामान्य तथ्य की ओर संकेत है कि आरामी सेना पहाड़ों पर से ''नीचे को आई, जहां एलीशा था?'' क्या इसका अर्थ यह है कि *स्वर्गदूतों* के एलीशा के पास ''नीचे आने'' के बाद नबी ने यहोवा से उस सेना को अंधा करने के लिए कहा? कइयों का मत है कि ''वे'' एलीशा और उसके सेवक के लिए हो सकता है और ''इस'' सामूहिक संज्ञा के रूप में अरामी सेना के लिए। [3]जी. रॉलिंसन, ''2 किंगस,'' *दि पुलपिट कमैंट्री,* अंक 5, *1 व 2 किंग्स,* संपा. एच. डी. एम. स्पेंस एंड जोसेफ एस. एक्सेल (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1950), 122. [4]एनकरटा® वर्ल्ड इंग्लिश डिक्शनरी, माइक्रोसॉफ्ट वर्ड वर्जन 10, माइक्रोसॉफ्ट कारपोरेशन, रेडमंड, वाशिंगटन, 1999. [5]सी. एफ. केल एंड एफ. डेलिश, *''1 और 2 किंग्स', ' कमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामेंट,* अंक 3, *1 एंड 2 किंग्स, 1 एंड 2 क्रॉनिकल्स, एज्रा, नहेम्याह, एस्तर* (पीबॉडी, मैसाचुएट्स: हैंड्रिक्सन पब्लिशर्स, 1989), 326; जेम्स ई. स्मिथ, *दि बुक्स ऑफ़ हिस्ट्री,* ओल्ड टैस्टामेंट सर्वे सीरीज़ (जॉप्लिन, मिजोरी: कॉलेज प्रैस पब्लिशिंग कं., 1995), 568; क्लाइड एम. मिल्लर, *फर्स्ट एंड सेकंड किंग्स,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, अंक 7 (अबिलेन, टैक्सस: ए.सी.यू. प्रैस, 1991), 340. [6]रॉबर्ट जेमियसन, ए. आर. फॉसेट, एंड डेविड ब्राउन, *कमैंट्री ऑन द होल बाइबल* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1961), 274. [7]रावलिंसन, 122. [8]जे. रॉबर्ट वेनॉय, नोट्स ऑन 2 किंग्स, *दि NIV स्टडीज़ बाइबल,* संपा. केन्नथ बार्कर (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1985), 534. [9]अगले पाठ में, योराम एलीशा का सिर काटने को तैयार हो गया (2 राजाओं 6:31)। वह ''दुचित्ता और अपनी सारी बातों में चंचल'' था (याकूब 1:8)। [10]वेनॉय, 534.

[11]एक यूनानी धर्मशास्त्र में एलीशा के शब्दों में ''नहीं'' जोड़ा गया है, पर अधिकतर प्राचीन हस्तलेखों में NASB वाली बात ही लिखी है [12]''सरमंस आई लाइक टू प्रीच,'' *ट्रुथ फ़ॉर टुडे* (अक्टूबर 1997): 7 में डेविड रोपर, ''अमेजिंग ग्रेस।''